

# कुरान में गणित के चमत्कार

कुरान के वैज्ञानिक चमत्कार

अक्षरों की संख्या में कुरान के चमत्कार

(कुरान में सांख्यिकी के चमत्कार)

7 का अंक कुरान में और इस ब्रह्मांड में भी बहुत महत्वपूर्ण है:

पार्ट-१



जैसा कि कुरान में सांख्यिकी के चमत्कारों से संबंधित पोस्टों में हमने पाया कि संपूर्ण कुरान अंक 7 के गणित से भी बिंधा हुआ है, अब हम देखते हैं कि अंक 7 किस प्रकार कुरान और मुहम्मद सल्ल की हदीस से रहस्यमयी प्रकार से संलग्न है और अंक 7 को क्यों ईश्वर की ओर बहुत अधिक विशेषता प्राप्त है,

यदि हम कुरान में प्रयुक्त सभी संख्याएँ का विप्लेषण करें और हर संख्या के अवतरण स्थान का अध्ययन करेंगे तो यह स्पष्ट होता जाता है कि अंक 7 को अल्लाह की ओर से अतिविशेष श्रेष्ठता प्रदान की गई है,

प्रश्न होगा कि क्यों केवल संख्या 7?

तो इस अंक 7 में ऐसी क्या विशेषता है?

क्यों कुरान में विभिन्न स्थानों पर इस अंक 7 की पुनरावृत्ति हुई है?

यहां यह याद रखना भी जरूरी है कि अंक 7 को इस ब्रह्मांड में , पवित्र कुरान में, और मुहम्मद सल्ल. की हदीस में भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, और पूरे कुरान इस अंक की पुनरावृत्ति बहुत अद्भुत विधि से की गई है, और हमारा विश्वास है कि धरती पर किसी और पुस्तक में अंक 7 ( या कोई भी संख्या जो इस अंक की भाज्य अथवा गणक है) को इस प्रकार अद्भुत विधि से प्रयोग किया गया है,

सत्यता में अंक 7 एक सिद्ध प्रसिद्धि प्राप्त संख्या है , और यह केवल कुरान में नहीं, बाइबिल में भी संख्या 7 का अधिकता से प्रयोग हुआ है, बाइबिल में संख्या 7 का उपयोग 300 से अधिक बार हुआ है, और कुछ ईसाई विद्वानों का यह भी मानना है कि यह संख्या 7 ' ईश्वर का अपना पवित्र अंक' है, और ईश्वर की संपूर्णता को दर्शाता है, R. McCormack. के द्वारा इस विषय पर एक पुस्तक भी लिखी गयी है जिसका नाम है :The Number Seven in the Bible and Nature ,

पार्ट-२

ब्रह्मांड में संख्या 7 का अस्तित्व:

जब ईश्वर ने ब्रह्मांड का सृजन किया , तो निश्चित ही उसने संख्या 7 को मुख्य संख्या के रूप में रखा , यहां आकाशों ( पृथ्वी के आसपास आकाशीय वातावरण-स्वर्गों- ब्रह्मांडों- आकाश गंगाओं )की संख्या 7 रखी गई है, अल्लाह के द्वारा कुरान की सूरह अल तलाक़ पाठ संख्या 65 की आयत संख्या 12 में बताया गया है कि:

(12) अल्लाह ही है जिसने बनाये सात आसमान और उन्हीं की भाँति धरती भी। उनके अन्दर उसका आदेश उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखता है। और अल्लाह ने हर चीज़ को अपने ज्ञान की परिधि में घेर रखा है।

परंतु अतिसूक्ष्म आण्विक स्तर पर यह संख्या बहुत स्पष्ट है , उदाहरण के लिए नाइट्रोजन का रसायनिक तत्व ( chemical element of nitrogen) , अपने आण्विक रूप में उस हवा का सबसे बड़ा भाग होता है जो हवा हम सांस लेने के लिए अपने भीतर लेते हैं, ,इसी प्रकार प्रोटीन का मुख्य अवयव लगभग 78% नाइट्रोजन पर आधारित होता है, इस प्रकार नाइट्रोजन इस धरती पर जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण अवयव है,

और यह सब जानते हैं कि नाइट्रोजन के एक अणु में पूरे 7 प्रोटान,7 न्यूट्रान और 7, ही इलेक्ट्रॉन होते हैं, यहां से भी हमें संख्या 7 की विशेषता पता चलती है , जो कि हमारे ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए आवश्यक अति महत्वपूर्ण पदार्थ के मूल में स्थापित है, इसके अतिरिक्त दिनों की गणना भी 7 ही है, इस धरती पर 7, महाद्वीप हैं, इंद्र धनुष में रंगों की संख्या भी 7 है, और इस पृथ्वी के भीतर geological परतें भी 7 ही हैं,

और इनमें कुछ बातें वैज्ञानिकों को अभी आधुनिक समय में पता चलीं हैं,

### पार्ट-3

मुहम्मद सल्ल. की हदीसों में संख्या 7 का वर्णन:

अल्हमदुलिल्लाह मुहम्मद सल्ल. की हज़ारों हज़ारों हदीस मौजूद हैं, और इन हदीसों के अध्ययन से पता चलता है कि इनमें भी अंक 7 को विशेष स्थान प्राप्त है,

हम यहां संक्षिप्त में कुछ हदीस का अध्ययन करेंगे, जो संख्या 7 से संबंधित हैं, और संख्या 7 को महत्वपूर्ण बताती हैं:

– बचो 7 , प्रकार के बड़े पाप ( गुनाह) से

– प्रलय के दिन अल्लाह 7 प्रकार के लोगों को अपनी छाया देगा

– जिस मनुष्य ने भी धोखे से किसी की संपत्ति को लिया , उसके सर को धरती में 7 परतों के नीचे गाड़ दिया जायेगा,( प्रलय के दिन)

– मुहम्मद सल्ल. की हदीस है कि क्या मैं तुम्हें बताऊं कि मस्जिद से निकलने समय कुरान का कौन सा पाठ पढ़ने के लिये सबसे उत्तम है? और यह कुरान का पहला पाठ ‘ अल्हमदुलिल्लाहे रब्बिल आलमीन’ है, जिसमें 7 आयतें हैं ,

– मुसलमानों को शरीर की 7 हड्डियों पर सजदा ( prostration) करने का आदेश है, अर्थात सजदा करते समय शरीर की 7, हड्डियों का स्पर्श धरती से होना चाहिये , जो इस प्रकार है. , एक नाक की हड्डी, दो हाथों की हड्डी, दो घुटने की हड्डी, और दो पैर के पंजों की हड्डी,)

– कुरान का अवतरण उस भाषा में हुआ है जिसका 7, विभिन्न विधाओं में उच्चारण होता है, जिससे कुरान को पढ़ने वाले को सुगमता प्राप्त हो

#### पार्ट-४

मुहम्मद सल्ल. की हदीसों में संख्या 7 का महत्व:

– निश्चित ही जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए एक दिन का उपवास करे, अल्लाह उस व्यक्ति को नर्क की अग्नि से 70 वर्षों की दूरी पर रखेगा

– नबी मुहम्मद सल्ल. का कथन है कि मेरे अनुयायियों में से 70,000 व्यक्तियों का स्वर्ग में प्रवेश बिना किसी प्रश्नोत्तर के होगा,

– जो भी अल्लाह से अपने किये पापों की क्षमा मांगता है वह निश्चित तौर पर घोषित पापी नहीं है, यहां तक कि वह दिन में 70 बार पाप करे, और 70 बार क्षमा मांगे

– यदि किसी बर्तन में कुत्ता पानी पी ले तो उसे पवित्र करने के लिए 7 बार धोया जाए

– यदि कोई व्यक्ति इस्लाम के नियमों को दृढ़ता से पालन करता है , तो उसके पुण्य कार्य को 10, से 70,000

गुना मापा जायेगा, पाप के कार्यों की गणना भी ऐसे ही होगी,

– यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को मिलने जाता है जो मरणावस्था में है, और उसके साथ 7 बार यह बोलता है कि , मैं अल्लाह से , जो कि विशाल सिंहासन का मालिक है, स्वास्थ्य प्रदान करता है , तो यदि अल्लाह ने चाहा तो वह व्यक्ति स्वस्थ हो जायेगा,

– अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्ल. ने अपने अनुयायियों से 7, बातों का पालन करने का ओर 7 बातों से बचने का निर्देश दिया है,

– जो व्यक्ति भी सुबह को उठ कर 'अजवा' खजूर खाता है वह उस दिन के लिए जादू और ज़हर से सुरक्षित हो जाता है, और यहां पर खजूरों की संख्या 7 बताई गई है,

– 7 का अंक , 1अंक के बाद कुरान में सबसे अधिक प्रयोग होने वाला अंक है

पार्ट-६

अंक 7 कुरान की आयतों में :

कुरान की आयतों में अंक 7 बहुत से संदर्भों में आता है, जिसमें से एक संदर्भ कुरान में लिखित लघुकथाएँ हैं, जैसे कि नबी नूह अलैहि. के द्वारा जब अपनी जनता को एकेश्वर की स्तुति के आमंत्रण देने का वर्णन है,

सूरह नूह पाठ संख्या 71की आयत संख्या 15-16 में नबी नूह अलैहि. का कथन है कि:

(15) क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार सात आसमान एक पर एक बनाये। (16) और उनमें चाँद को प्रकाश और सूरज को दीपक बनाया।

इसी प्रकार नबी यूसुफ अलैहि. की कथा में अंक 7 का प्रयोग हुआ है

सूरह यूसुफ पाठ संख्या 12 की आयत संख्या 43 का अध्ययन करें,

(43) और राजा ने कहा कि मैं स्वप्न में देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियाँ हैं और अन्य सात सूखी बालियाँ, ऐ दरबारियो, मेरे स्वप्न का अर्थ मुझे बताओ यदि तुम स्वप्न का अर्थ जानते हो।

और पवित्र कुरान के इसी पाठ में अल्लाह के द्वारा अंक 7 की पुनरावृत्ति लगातार आयतों में 3, बार हुई है,

सूरह यूसुफ पाठ संख्या 12 की आयत संख्या 46-48

(46) यूसुफ ऐ सच्चे, मुझे इस स्वप्न का अर्थ बता कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालियाँ हरी हैं और अन्य सात सूखी। ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊँ कि वह जान लें। (47) यूसुफ ने कहा कि तुम सात वर्षों तक निरन्तर खेती करोगे। तो जो फसल तुम काटो, उसको उसकी बालियों में छोड़ दो परन्तु थोड़ा सा जो तुम खाओ। (48) परन्तु इसके बाद सात कठोर वर्ष आयेंगे। उस अवधि में वह अनाज़ खा लिया जायेगा जो तुम उस समय के लिए एकत्र करोगे, सिवाय थोड़ा सा जो तुम सुरक्षित कर लोगे।

पार्ट-७

पवित्र कुरान में यह अंक 7 नबी हूद अलैहि की कथा में भी है, जब उस जनता के विषय में , जिनको नबी हूद अलैहि सलाम के एकेश्वर की स्तुति के निमंत्रण की अवहेलना के लिए प्रताड़ित करने का वर्णन है,

पढ़ें कुरान की सूरह अल हाक्कह: पाठ संख्या 69 की आयत संख्या 5-7:

(5) अतः समूद, तो वह एक भयानक दुर्घटना से नष्ट कर दिये गये। (6) और आद, तो वह एक प्रचण्ड हवा से नष्ट किये गये। (7) उसको अल्लाह ने निरन्तर सात रात और आठ दिन उनपर लगाये रखा, तो तुम देखते हो कि वहाँ वह इस प्रकार गिरे हुए पड़े हैं मानो कि वह खजूरों के खोखले तने हों।

और नबी मूसा अलैहि सलाम की कथा में भी अंक 70, का विवरण है जो कि अंक 7 का भाज्य है,

पढ़ें कुरान की सूरह अल आराफ पाठ संख्या 7, की आयत संख्या 155:

155) और मूसा ने अपनी क्रौम में से सत्तर व्यक्ति चुने हमारे निर्धारित किए हुए समय के लिए फिर जब उनको भूकम्प ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ पालनहार, यदि तू चाहता तो पहले ही इनको नष्ट कर देता और मुझको भी। क्या तू हमको ऐसे कर्म पर नष्ट करेगा जो हमारे अन्दर के मूर्खों ने किया। यह सब तेरी परीक्षा है, तू इससे जिसको चाहे भटका दे और जिसको चाहे सन्मार्ग प्रदान कर दे। तू ही हमारा संरक्षक है। अतः हमको क्षमा कर दे और हम पर दया कर, तू सबसे अच्छा क्षमा करने वाला है।

इस के अतिरिक्त अंक का अवतरण सूरह अल कहफ ( गुफा के व्यक्तियों) की कथा में है, जब गुफा में मौजूद लोगों की संख्या का वर्णन किया गया है, पढ़ें कुरान की सूरह अल कहफ पाठ संख्या 18 की आयत संख्या 22,:

(22) कुछ लोग कहेंगे कि वह तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ लोग कहेंगे कि वह पाँच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग अनभिज्ञता की बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वह सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता था। कहो कि मेरा पालनहार भली-भांति जानता है कि वह कितने थे। कम ही लोग उनको जानते हैं। अतः तुम सामान्य बात से अधिक उनके मामले में वास्ता न करो। और न उनके सम्बन्ध में उनमें से किसी से पूछो।

संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि अंक 7 ( और इसके गणक) कुरान में वर्णित कथाओं में मिलते हैं जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती, इसके अतिरिक्त जो लोग भी पुरानी इतिहास कथाओं को जानने का शौक रखते हैं विशेषकर मिस्री से संबंधित , यह बात भी नोट करें कि अंक 7 प्राचीन मिस्र मे भी बहुत महत्वपूर्ण माना गया है, जिसको वहां एक संपूर्णता का अंक माना जाता था,

पवित्र कुरान में अंक 7 का वर्णन न केवल इस संसार के संबंध में है बल्कि यह परलोक और प्रलय के संदर्भ में प्रयोग हुआ है, अरबी में प्रलय को 'अल क्रियामा' कहते हैं, पूरे कुरान में 'अल क्रियामा' शब्द की पुनरावृत्ति 70 बार हुई है, और निश्चित ही यह अंक 7 का पूर्ण भाज्य है,

$$70 = 10 \times 7$$

इसके साथ ही शब्द 'जहन्नुम' जिसका तात्पर्य नर्क या नर्क की अग्नि है, यह भी 77 बार दोहराया गया है,

और यह भी संख्या 7 का पूर्ण भाज्य है,

$$77 = 11 \times 7$$

कुरान में अल्लाह के द्वारा जहन्नुम के 7 दरवाजों का भी वर्णन है,

कुरान की सूरह अल हिज्र पाठ संख्या 15,,की आयत संख्या 43-44,, में लिखित है कि

(43) और उन सब के लिए नरक का वादा है। (44) उसके सात दरवाजे हैं। प्रत्येक दरवाजे के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं।

यहां तक कि जब ईश्वर की ओर से नर्क में दी जाने वाली प्रताड़ना का वर्णन है तब भी वहां पर एक संख्या 7 के गणक 70 है,

कुरान की सूरह अल हाक्काह: पाठ संख्या 69 की आयत संख्या 25-33 में लिखित है :

(25) और जिस व्यक्ति का कर्म पत्र उसके बायें हाथ में दिया जायेगा, तो वह कहेगा- काश मेरा कर्म पत्र मुझे न दिया जाता। (26) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है। (27) काश वही मृत्यु अन्तिम होती। (28) मेरी सम्पत्ति मेरे काम न आयी। (29) मेरी सत्ता समाप्त हो गयी। (30) उस व्यक्ति को पकड़ो, फिर उसको पट्टा पहनाओ। (31) फिर उसको नरक में डाल दो। (32) फिर एक जंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर हाथ है उसको जकड़ दो। (33) यह व्यक्ति महान अल्लाह पर विश्वास न रखता था। (34) और वह निर्धनों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था।



निश्चित ही यह स्पष्ट होता है कि ईश्वर ने इस संख्या का उपयोग वहां किया है जहां वह अपनी प्रभुत्व का वर्णन करता है, कुरान के एक और उदाहरण देते हैं,

कुरान की सूरह लुकमान पाठ संख्या 31 की आयत संख्या 27 में लिखित है कि:

27) और यदि धरती में जो वृक्ष हैं वह कलम बन जायें और समुद्र, सात अन्य समुद्रों के साथ स्याही बन जायें, तब भी अल्लाह की बातें समाप्त न हों। निस्सन्देह अल्लाह सर्वशक्तिमान है, विवेकवाला है।

#### पार्ट-10

पवित्र कुरान में अंक 7 और अल्लाह की स्तुति के वर्णन :

पूरे कुरान में , उन पाठों की निश्चित संख्या 7 बनती है जिनके प्रारंभिक शब्द ईश्वर की स्तुति और वंदना करते हैं, इन पाठों के नाम इस प्रकार हैं, 1-सूरह अल इसरा( सूरह बनि इसराइल), 2-, सूरह अल हदीद , 3- सूरह अल हसायर, 4-सूरह अल सफ़ः, 5-सूरह अल जुमुआह,6- सूरह अल तगाबुन, ,और 7-सूरह अल अआ'ला

आइये इन 7 पाठों की प्रारंभ की आयतों का अध्ययन करते हैं:

1- सूरह अल इसरा (सूरह बनी इसराईल) पाठ संख्या 17 आयत संख्या 1:

(1) पवित्र है वह जो ले गया एक रात अपने बन्दे (मुहम्मद सल्ल0) को मस्जिद-ए हराम (काबा) से दूरवर्ती उस मस्जिद (बैतुल-मक़दस) जिसके वातावरण को हमने बरकत (विभूति) वाला बनाया है,

2-,सूरह अल हदीद पाठ संख्या 57 की आयत संख्या 1:

(1) अल्लाह की स्तुति करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों और धरती में है और वह प्रभुत्वशाली है। सर्वज्ञाता है।

3-,सूरह अल हसायर ( अल हश्र) पाठ संख्या 59 आयत संख्या 1:

(1) अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं सब चीज़ें जो आकाशों और धरती में हैं, और वह सर्वज्ञ है, शक्तिशाली है।

4- सूरह अल सफ़ः पाठ संख्या 61 आयत संख्या 1:

(1) अल्लाह की स्तुति करती है प्रत्येक चीज़ जो आसमानों और धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली है, विवेकशील है।

5-सूरह अल जुमुआह पाठ संख्या 62 आयत संख्या 1:

(1) अल्लाह की स्तुति कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और जो धरती में है- जो बादशाह है, पवित्र है, शक्तिशाली, विवेकशील है।

6- सूरह अल तगाबुन, पाठ संख्या 64 आयत संख्या 1:

(1) अल्लाह की स्तुति कर रही है हर चीज़ जो आकाशों में है और हर चीज़ जो धरती में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए प्रशंसा है। और वह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है।

7- सूरह अल अआ'ला पाठ संख्या 87 आयत संख्या 1:

(1) अपने पालनहार के नाम की पवित्रता का वर्णन करो जो सबसे श्रेष्ठ है।

ऊपर प्राप्त परिणाम से यह बहुत स्पष्ट पता चलता है कि. संख्या 7 और इन आयतों में एक संबंध है, और अधिक संबंधों के विषय में ईश्वर. ही जानता है जो कि सारे संसार के ज्ञान का सत्य अधिकारी है

पार्ट-12

पवित्र कुरान में आयतें हैं जिसमें अल्लाह के द्वारा इस ब्रह्मांड ( धरती , आकाश, और इनके बीच हर वस्तु का अस्तित्व) को रचने का समय 6 दिन बताया गया है, यदि हम इन आयतों का निरीक्षण करें तो पता चलेगा कि इन आयतों की संख्या पूरे कुरान में 7 है,

## 1- कुरान की सूरह अल आराफ पाठ संख्या 7 की आयत संख्या 54

(54) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिसने आकाशों और पृथ्वी की रचना छः दिनों में की। फिर वह अर्श (सिंहासन) पर आसीन हुआ। वह ओढ़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ। और उसने पैदा किये सूरज और चाँद और तारे, सब आज्ञाकारी हैं उसके आदेश के। याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और आदेश करना। बड़ी बरकत (विभूति) वाला है अल्लाह जो पालनहार है समस्त संसार का।

## 2- कुरान की सूरह यूनस पाठ संख्या 10 की आयत संख्या 3

(3) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार अल्लाह है जिसने आकाशों और

धरती की छः दिनों (छः समय-अवधि) में रचना की, फिर वह सिंहासन पर स्थापित हुआ। वही मामलों की व्यवस्था करता है। उसकी अनुमति के बिना कोई सिफारिश करने वाला नहीं। यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है अतः तुम उसी की उपासना करो, क्या तुम सोचते नहीं।

## 3- कुरान की सूरह हूद की पाठ संख्या 11 की आयत संख्या 7

(7) और वही है जिसने आकाशों और धरती की छः दिनों में रचना की। और उसका सिंहासन पानी पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि कौन तुममें अच्छा काम करता है। और यदि तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाये जाओगे तो झुठलाने वाले कहते हैं यह तो खुला हुआ जादू है।

## 4- कुरान की सूरह अलफुरक़ान पाठ संख्या 25 की आयत संख्या 59

(59) जिसने पैदा किया आसमानों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके मध्य है, छः दिन में। फिर वह सिंहासन पर आसीन हुआ। रहमान, अतः उसको पूछो किसी जानने वाले से।

पार्ट-11

अंक 7 और कुरान के अक्षर:

निश्चित ही यह ईश्वरीय बुद्धिमिता है कि कुरान में यह वर्णित है कि कुरान का अवतरण अरबी भाषा में हुआ है, यह एक ऐसी भाषा है जिसकी वर्णमाला में निश्चित ही कुल 28 अक्षर हैं, जो संख्या 7 का पूर्ण भाज्य है,

$$28 = 4 \times 7$$

7 की यह संख्या कुरान के प्रारंभिक पाठ में भी है, जिसका नाम 'सूरह अल फातिहा' है, और कुरान के इस पहले पाठ में भी 7 आयतें ( पंक्तियां अथवा वाक्य) हैं,

और इस संख्या का वर्णन अल्लाह के द्वारा कुरान के एक अन्य पाठ सूरह अल हिज्र पाठ संख्या 15 की आयत संख्या 87 में किया है,

(87) और हमने तुमको सात मसानी और महान कुरआन प्रदान किया है।

यहां प्रयुक्त शब्दों 'सात मसानी' का आशय कुरान की प्रारंभिक 'सूरह अल फातिहा' की 7 आयतें हैं, और निश्चित ही कुरान के इस पाठ 'सूरह अल फातिहा' को एक उत्कृष्ट पाठ का स्थान प्राप्त है, इस पाठ की पुनरावृत्ति एक मुसलमान के जीवन में अत्यधिक बार होती है, क्योंकि कुरान का यही वह पाठ है जो मुसलमान अपनी सलाह ( नमाज़, प्रार्थना, prayer) में दोहराते हैं जो कि एक दिन में कम से कम 5 बार तो अनिवार्य है,

इसके अतिरिक्त कुरान का सर्वप्रथम पाठ न केवल 7 आयतों पर आधारित है, बल्कि इस तथ्य को सूरह अल हिज्र में वर्णन भी किया गया है, और अब हम सूरह फातिहा में निहित एक अन्य सांख्यिकी चमत्कार का वर्णन करते हैं कि इस पाठ में अरबी वर्णमाला के 28 अक्षरों में से पूरे 21 अक्षरों का प्रयोग हुआ है, और यह भी सामान्य गणित की बात है कि 21 की संख्या 7 के अंक से पूर्णतया भाज्य है,

$$21 = 3 \times 7!$$

कुरान की पवित्र आयतों में एक और रोचक तथ्य है , कुरान में कुछ पाठों के प्रारंभ में विशेष रहस्यमयी अक्षरों ( जिनको मिला कर विशेष रहस्यमयी शब्दों का निर्माण हुआ है) का प्रयोग किया गया है, हम इन शब्दों या आयतों को इस कारण रहस्यमयी कहते हैं कि अभी तक इन शब्दों के कुरान में होने का पूर्ण अर्थ ज्ञात नहीं हुआ है, यह विशेष रहस्यमयी अक्षर जो विभिन्न पाठों के प्रारंभ में आते हैं , निम्न हैं:

(الم، المص، الر، المر، كهيعص، طه، طس، يس، ص، حم، عسق، ق، ن)

जैसा कि आप देख सकते हैं कि यह विशेष रहस्यमयी अक्षरों की संख्या भी पूर्ण 14 है , और यह संख्या पुनः अंक 7 का पूर्ण गणक है ,  $14 = 2 \times 7$

यहां पर यह बात भी नोट करने वाली है कि इनमें से कुछ शब्द समूह केवल एक ही अरबी अक्षर पर आधारित हैं, उदाहरण के लिए ( ن ) , कुछ दो अक्षरों पर आधारित हैं , जैसे ( حم ), कुछ तीन अरबी अक्षरों से बने हैं, जैसे ( الر ), कुछ चार अक्षरों से बने हैं जैसे कि ( المص ), और कुछ अरबी के पांच अक्षरों से बने हैं जैसे कि ( كهيعص ) ,

लेकिन यह जिस प्रकार भी अवतरित हुए हैं अत्यंत अद्भुत संरचना प्रस्तुत करते हैं, इन सारे अक्षरों की गणना करने पर न केवल संख्या 14 प्राप्त होती है बल्कि , इन अक्षरों से जो शब्द अथवा वाक्य बनाये गये हैं उनमें प्रयोग होने वाले अक्षरों की संख्या भी 14, बनती है, अर्थात् इन शब्दों का निर्माण करने में भी अरबी वर्णमाला के 14, अक्षरों को प्रयोग किया गया है, और अरबी भाषा के यह अक्षर निम्न हैं,

الم ص ر ك ه ي ع ط س ح ق ن

संभावना है कि अरबी वर्णमाला के 14 अक्षरों को 14 प्रकार के रहस्यमयी शब्दों के रूप में प्रस्तुत करने का उद्देश्य संख्या 14 का अंक 7 का पूर्ण भाज्य होना है, इस तरह से ईश्वर द्वारा 7, अंक से पूरे कुरान को सांख्यिकी के गणित की अकाट्य प्रणाली में बांधना सफल हुआ।

( सदक़ल लाहो अलिऊल अज़ीम)

पार्ट-13

पवित्र कुरान में आयतें हैं जिसमें अल्लाह के द्वारा इस ब्रह्मांड ( धरती , आकाश, और इनके बीच हर वस्तु का अस्तित्व) को रचने का समय 6 दिन बताया गया है, यदि हम इन आयतों का निरीक्षण करें तो पता चलेगा कि इन आयतों की संख्या पूरे कुरान में 7 है,

5-कुरान की सूरह अल सजदह पाठ संख्या 32 की आयत संख्या 4

(4) अल्लाह ही है जिसने पैदा किया है आकाशों और पृथ्वी को और जो उनके मध्य हैं छः दिनों में फिर वह सिंहासन पर कायम (आसीन) हुआ। उसके अतिरिक्त न तुम्हारा कोई सहायक है और न कोई सिफारिश करने वाला। तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।

6- कुरान की सूरह काफ पाठ संख्या 50 की आयत संख्या 38

(38) और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है छः दिन में बनाया और हमको कुछ थकान नहीं हुई। (

7- कुरान की सूरह हदीद पाठ संख्या 57 की आयत संख्या 4

(4) वही है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह जानता है जो कुछ धरती के अन्दर जाता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

इस तरह सृष्टि की 6,,, दिन में रचना करने की चर्चा पूरे कुरान में 7, बार हुई है, प्रश्न वहीं है कि यह सब संयोगवश हुआ है कि इस पीछे ईश्वरीय बुद्धिमिता है, और निश्चित ही यदि आप इन सभी 7 आयतों का अध्ययन करें तो पता चलता है कि इन सब आयतों में केवल आकाश (स्वर्ग) का संबोधन है, किसी भी आयत में इन आकाशों की संख्या 7 होने का उल्लेख नहीं है,

इसी कारण हम कुरान की अन्य आयतों को देखेंगे जहाँ आकाश की संख्या 7 का उल्लेख है,

और इस ईश्वरीय किताब कुरान में संख्या 7 से किये गये अद्भुत प्रबंधन का विस्तार अध्ययन करेंगे

पार्ट -,14

पवित्र कुरान में 7, का अंक और 7आकाशों (आकाश के स्तर, ब्रह्मांड की सीमाओं) का वर्णन

जब हम कुरान की उन आयतों का अध्ययन करते हैं जिन आयतों में 7 आकाशों का वर्णन है तो पाते हैं कि इन आयतों और अंक 7 के बीच भी एक संबंध है, और यह इस प्रकार है कि यह आकाश से संबंधित वाली आयतों की संख्या भी पूरे कुरान में 7 है, अध्ययन करें

1 – सूरह अल बकरह पाठ संख्या 2 की आयत संख्या 29:

(29) फिर वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो धरती पर है, फिर उसने आसमान की ओर ध्यान दिया और सात आसमान ठीक ढंग से बनाया, और वह हर चीज़ को जानने वाला है।

2 – सूरह अल इसरा पाठ संख्या 17 की आयत संख्या 44:

(44) सातों आसमान और पृथ्वी और जो इनमें हैं, सभी उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन न करती हो। परन्तु तुम उनकी स्तुति को नहीं समझते। निस्सन्देह वह सहनशील है, क्षमा करने वाला है।

3 – सूरह अल मोमिनून पाठ संख्या 23, की आयत संख्या : 86-87

(86) कहो कि कौन स्वामी है सात आसमानों का और कौन स्वामी है महान सिंहासन का।  
(87) वह कहेंगे कि सब अल्लाह का है। कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं।

4- सूरह फुस्सिलात पाठ संख्या 41 की आयत संख्या : 12

12) फिर उसने दो दिन में उसके सात आकाश बनाये और प्रत्येक आकाश में उसने आदेश भेज दिया। और हमने संसार के आकाश को दीपकों से सौन्दर्य प्रदान किया, और उसको सुरक्षित कर दिया। यह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ की योजना है।

5-, सूरह अल तलाक पाठ संख्या 65 की आयत संख्या : 12

(12) अल्लाह ही है जिसने बनाये सात आसमान और उन्हीं की भाँति धरती भी। उनके अन्दर उसका आदेश उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखता है। और अल्लाह ने हर चीज़ को अपने ज्ञान की परिधि में घेर रखा है।

6- सूरह अल मुल्क पाठ संख्या 67, की आयत संख्या :3

(3) जिसने बनाये सात आसमान ऊपर नीचे, तुम रहमान के बनाने में कोई त्रुटि न देखोगे, फिर दृष्टि डाल कर देख लो, कहीं तुमको कोई दोष दिखाई देता है।

7- सूरह नूह पाठ संख्या 71, की आयत संख्या 15-16

15) क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार सात आसमान एक पर एक बनाये।

(16) और उनमें चाँद को प्रकाश और सूरज को दीपक बनाया।

इसको दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि महान अल्लाह ने 7 विशाल आकाशों की रचना की, जिसमें से हम मनुष्य केवल निचले आकाश को बिना किसी यंत्र के देख सकते हैं, और निसंदेह केवल उसी महान अल्लाह ने अत्यंत बुद्धिमिता के साथ पूरे कुरान में इन आकाशों की पुनरावृत्ति पूरे 7 बात की, दक्षता के साथ पूरे 7 बार,

( निश्चित ही अल्लाह का कथन पूर्णतयः सत्य होता है)

पार्ट -,15

पवित्र कुरान में अंक 7 का प्रथम और अंतिम वर्णन – एक ऐसी समानता जिसे आप नकार नहीं सकते:

एक ऐसी संख्या ( अंक 7) जिसका उपयोग कुरान में एक निरंतर और अकाट्य सांख्यिकी प्रणाली को बांधने के लिए हुआ है, आइये देखते हैं कि कुरान में संख्या 7 के पहली बार प्रयोग में और अंतिम बार प्रयोग में कोई संबंध बनता है?

कुरान में संख्या 7 का उपयोग पहली हुआ है जब महान अल्लाह ने घोषणा की है कि:

अध्ययन करें सूरह अल बकरह पाठ संख्या 2 की आयत संख्या 29:



29) फिर वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो धरती पर है, फिर उसने आसमान की ओर ध्यान दिया और सात आसमान ठीक ढंग से बनाया, और वह हर चीज़ को जानने वाला है।

इसी प्रकार अंतिम बार इस संख्या का उपयोग किया गया है निम्नलिखित आयत में,

अध्ययन करें सूरह अल नबह पाठ संख्या 78, की आयत संख्या 12:

(12) और हमने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आसमान बनाये।

अब हम निरीक्षण करते हैं कि इन दोनों आयतों में अवतरित संख्या 7 के बीच किस प्रकार गणितीय रहस्यात्मक तथ्य छुपे हुए हैं,

तथ्य -1

इस संख्या का उपयोग जब पहली बार हुआ है तो उस पाठ की संख्या 2 है , और अंतिम बार जब इस संख्या का प्रयोग हुआ है तो वह पाठ संख्या 78 है, अर्थात जब इन पाठों का अंतराल गिना जाएगा तो संख्या 77 होगी , जो स्वयं अंक 7 का गणक है ,

$$11 \times 7 = 77$$

तो एक बार यह निश्चित होता है कि कुरान में पहली बार अंक 7 का उपयोग वाले पाठ और अंतिम बार अंक 7 का उपयोग वाले पाठ के अंतराल में और अंक 7 में एक अकाट्य सांख्यिकी प्रणाली है, अब हम यह देखेंगे कि जहां यह अंक अवतरित हुआ है ( पहली बार और अंतिम बार) क्या उन आयतों में भी कोई संबंध बनता है?

तथ्य- 2

यदि हम उन आयतों की संख्या की गिनती करते हैं जहां यह अंक पहली बार और आखिरी बार अवतरित हुआ है तो पता चलता है कि पहली बार यह अंक सूरह अल बकरह की आयत संख्या आयत संख्या 29 में लिखित है और अंतिम बार यह अंक सूरह अल नबह की आयत संख्या 12 में लिखित है, और इन दोनों आयतों का अंतराल की संख्या बनती है 5649 , जो कि पुनः अंक 7 से पूर्ण भाज्य है,

$$5649 = 807 \times 7$$

अभी तक हमने चमत्कारी कुरान में अंक 7 के पहले और अंतिम बार उपयोग को पाठ संख्या और आयत संख्या के माध्यम से अध्ययन किया , जो कि उन संख्याओं पर अवतरित होते हैं जो कि संख्या 7 से पूर्ण भाज्य बनती हैं, परंतु अभी और आश्चर्य भी उपलब्ध हैं –

तथ्य – 3

सूरह अल बकरह की सबसे पहली आयत से ( जिस पाठ में यह अंक सबसे पहले आता है) सूरह अल नबह की अंतिम आयत तक , ( जिस पाठ में यह अंक अंतिम बार आया है) में आयतों की कुल संख्या की गिनती 5705,, बनती है जो कि एक बार फिर अंक 7 से पूर्णतः भाज्य है,

$$5705 = 815 \times 7$$

इस तरह से यह स्थापित हुआ कि न केवल पाठ क्रम संख्याएं, बल्कि विभिन्न प्रकार से गिनती करी गई आयतों की संख्याओं का भी गणित के अनुसार संख्या 7 से संबंधित हैं,

और यह ध्यान रखें कि हमारी चर्चा अंक 7 को पवित्र कुरान में विभिन्न विधियों से प्रयोग को लेकर हो रही है,

पार्ट -,16

पवित्र कुरान में अंक 7 का प्रथम और अंतिम वर्णन – एक ऐसी समानता जिसे आप नकार नहीं सकते:

तथ्य – 4

पवित्र कुरान में सूरह अल बकरह की वह आयत जहां सबसे पहले अंक 7 का अवतरण हुआ है उससे ठीक पहले वाली आयत क्रमांक 28, है , जो संख्या 7 का पूर्ण भाज्य है, और यह बहुत तर्कपूर्ण है क्योंकि कुरान में जहां पहली बार अंक 7 आया है वह आयत क्रमांक संख्या 29 है, तो अर्थ यही है कि इससे पहले पूरी 28 आयतें अवतरित हुईं, इसका अर्थ यह भी है कि जब हम इस पाठ की पहली आयत से गिनते हुए उस आयत तक आते हैं जहां स्पष्ट संख्या लिखित हैं तो इससे पहले 28 आयतें हैं,

अध्ययन करें सूरह अल बकरह पाठ संख्या 2 की आयत संख्या 29

(29) फिर वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो धरती पर है, फिर उसने आसमान की ओर ध्यान दिया और सात आसमान ठीक ढंग से बनाया, और वह हर चीज़ को जानने वाला है।

अब यहां पर एक और प्रश्न है कि पवित्र कुरान की वह आयत जहां अंतिम बार संख्या 7 का उपयोग हुआ है, क्या वहां भी कोई संख्या प्रणाली की संभावना है?

और यहां भी उत्तर सकारात्मक है, और यह प्रबंधन इतना सटीक है कि यहां भी आयतों की संख्या 28, बनती है, यहां पर यदि हम सूरह अल नबह की 12 वीं आयत जहां पर कुरान में अंतिम बार संख्या 7 का प्रयोग हुआ है इस पाठ के अंत तक आयतों की संख्या की गिनती करते हैं तो संख्या पूर्णतः 28 बनती है,

है न सांख्यिकी का चमत्कार? लेकिन यह चमत्कार यहीं नहीं समाप्त नहीं होता,

अब हम पूछते हैं कि कुरान की सर्वप्रथम आयत से सूरह अल नबह की अंतिम आयत ( जहां संख्या 7 का लिखित वर्णन है,) तक आयतों की संख्या कितनी बनती है ?

तथ्य – 5

यदि कुरान की सबसे पहली आयत से सूरह अल नबह की अंतिम आयत तक आयतों की संख्या की गिनती करते हैं तो जो संख्या मिलती है वह है 5712, और आश्चर्य जनक रूप से यह भी अंक 7 से पूर्णतया विभाजित है,

$$5712=816 \times 7$$

पार्ट -17

पवित्र कुरान में अंक 7 का प्रथम और अंतिम वर्णन – एक ऐसी समानता जिसे आप नकार नहीं सकते:

तथ्य – 6

इस चर्चा में एक तथ्य और ध्यानाकर्षण करता है कि अरबी भाषा में अंक 7 को शब्दों में व्यक्त करने के लिए

विभिन्न विधियों का प्रयोग होता है और यह जहां यह अंक लिखित है उसके अर्थ पर निर्भर करता है, इस बात को इस प्रकार से कहा जा सकता है कि जब इस अंक 7 को कुरान की सूरह अल बकरह पाठ संख्या 02 में शब्दों में लिखा गया है तो इसे अरबी के 3 अक्षरों से लिखा गया है (س ب ,और ع ) का प्रयोग हुआ है और शब्द (سبع) बना है, परंतु जब यह अंक 7 अंतिम बार उपयोग हुआ है तो इस में अरबी के 4 अक्षरों का प्रयोग हुआ है (س ب ع ا) और इसको (سبع) लिखा गया है, इस प्रकार यदि प्रथम बार और अंतिम बार उपयोग हुए अक्षरों की संख्या का योग करें  $3+4=7$ , तो फल अंक 7 ही मिलता है,

अंत में यह प्रश्न पूछा जाना चाहिए कि क्या कुरान के पाठों, वाक्यों ( आयतों) , और अक्षरों में अंक 7 का गणित इस प्रकार निहित होना केवल एक संयोग है? और निश्चित ही यह एक ऐसा निर्णय है जो बहुत कठिन है, यदि आपको ईश्वरीय शक्ति पर संदेह है, परंतु हर पाठक कुरान को गंभीरता से अध्ययन करने के बाद अपना निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है,

अभी तक हमने कुरान में गणित की दक्षता का वह भाग अध्ययन किया जिसका हर पाठक स्वयं अध्ययन करके निर्णय पर पहुंच सकता है, परंतु इस का केवल अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि इसी प्रक्रिया से कुरान की सभी आयतों का अध्ययन हो तो कितने आश्चर्यजनक तथ्यों को पता चल सकता है, वैज्ञानिक तर्क से यह माना जाता है कि किसी पुस्तक में इस प्रकार की अंक व्यवस्था का होना केवल तभी संभव है जब कि लेखक ने अपने शब्दों को विशिष्ट प्रणाली से व्यवस्थित किया हो,

और हमें यह विश्वास है कि जो अंक 7 का संबंध कुरान में है और जो हमने इस पूरे अध्ययन में पाया है, यह प्रमाणित करता है कि निसंदेह पवित्र कुरान में शब्दों के माध्यम से यह अंक व्यवस्था केवल और केवल महान अल्लाह ( एक ईश्वर) का कार्य है, और यह प्रमाणित करता है कि कुरान अल्लाह की रचना है जो निसंदेह रचियता है 7 आकाशो ( आकाश के 7स्तरों, स्वर्गों, ब्रह्मांड ) का,

अंतिम सत्य यही है कि हम एक साधारण मानव के रूप में शायद कभी इतने समर्थ न हो पायें कि कुरान में छुपे असंख्य सांख्यिकी के रहस्यों का पता लगाने में सफल हों,

पार्ट -,18

हम पवित्र कुरान में सांख्यिकी के चमत्कार का अध्ययन क्यों कर रहे हैं?

इस ब्रह्मांड में हर वस्तु एक निश्चित प्रणाली के अंतर्गत कार्य करती है, विशेषतः 21वीं सदी में संख्या की भाषा को अति महत्वपूर्ण स्थान पर रखा जाता है,

उदाहरण के लिए के आज के युग में जब वैज्ञानिक चंद्रमा और सूर्य की परिक्रमा, ग्रहों के बीच की दूरियां, या पृथ्वी की संभावित आयु और पत्थरों और पहाड़ों के विषय में व्याख्यान देते हैं, यह सब व्याख्यान संख्या प्रणाली पर आधारित होते हैं,

हम संख्या के बिना भविष्य की तिथियों की सटीक गणना नहीं कर सकते, और बहुत सी प्राकृतिक घटनाओं जैसे कि सूर्य और चंद्र ग्रहण के होने की गणना नहीं कर सकते, और बहुत निचले स्तर पर हम बिना संख्याओं के समय का आकलन भी नहीं कर सकते, निसंदेह संख्याएं हमारे संसार को एक अर्थ देती हैं,

आज के युग में महीने की गणना दिनों पर निर्भर है, और वर्ष की गणना महीने की संख्या पर निर्भर है, और यह तथ्य भी महान अल्लाह ने कुरान के माध्यम से बताया है,

पवित्र कुरान की सूरह अल तौबा पाठ संख्या 9 की आयत संख्या 36 में वर्णित है कि:

(36) महीनों की संख्या अल्लाह के निकट बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में, जिस दिन से उसने आकाशों और पृथ्वी को बनाया, उनमें से चार हुरमत (निषेध) वाले हैं। यही है सीधा पंथ।.....

यह है जो हम मानव के लिये ईश्वर का संदेश है, स्वाभाविक है कि ईश्वर का संदेश किसी सामान्य मनुष्य के संदेश के समान नहीं होता है, इसी कारण हमने इस पूरे अध्ययन में कुरान के शब्दों में निहित अभूतपूर्व सांख्यिक प्रणाली की चर्चा बहुत आसान विधि से करने का प्रयास किया,

और प्रमाणित किया कि कुरान ऐसी पुस्तक है जिसके संपूर्ण शब्दों की संरचना अकाट्य गणितीय विधि से बिंधी हुई है,

दूसरे शब्दों में यह हम मुसलमानों का दृढ़ विश्वास है कि महान अल्लाह ने कुरान में अक्षरों, शब्दों, आयतों और पाठों को चमत्कारिक विधि से व्यवस्थित किया है, और यह व्यवस्था इस प्रकार है कि यह सब मिलकर एक सुंदर दृश्य प्रस्तुत करते हैं, और सांख्यिकी के स्तर पर दक्षता और संपूर्णता का यह उदाहरण एक विश्वसनीय साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि निसंदेह कुरान महान ईश्वर का अनुपम संदेश है, क्योंकि यदि कुरान किसी मानव द्वारा सृजित पुस्तक होती तो इसमें गणितीय आधार पर भी विरोधाभास पाये जाने की संभावना होती, इस प्रकार कुरान सांख्यिक संपूर्णता की परीक्षा में सफल होती है,

आज के समय में इस पूरे साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अध्ययन हो रहा है, नीचे दिया गया चित्र इस विषय पर मलेशिया में की गई एक संगोष्ठी का है,

पार्ट -19

अब हम पवित्र कुरान में सांख्यिकी की कुछ और व्यवस्थाओं को देखते हैं, और यह व्यवस्था कुरान के प्रारंभ के पाठ से लेकर कुरान के अंतिम पाठ तक संख्या 7 की सांख्यिकी व्यवस्था से संबंधित है,

कुरान में कुछ संख्याएँ तो बहुत निश्चित हैं जिसमें किसी दुविधा का प्रश्न ही नहीं हो सकता, जैसे कि कुरान में कुल पाठों की संख्या 114 है,

कुरान के पहले पाठ को 'सूरह फातिहा' कहते हैं , अरबिक शब्द फातिहा का अर्थ ही प्रारंभ अथवा प्रस्फुटन होगा, तो इस तरह इस पाठ की संख्या क्रम 1 होगा, और इसी तरह से कुरान के पाठ संख्या में आगे बढ़ते जायेंगे तो अंतिम पाठ सूरह अल नास जिसका क्रम संख्या 114 है,

आइये कुरान के पहले पाठ संख्या और अंतिम पाठ संख्या को पुरानी विधि के अनुसार व्यवस्थित करते हैं,

114. 1

और इन संख्याओं को एक ही संख्या मान कर लिखा जाए तो प्राप्त संख्या 1141 होगी, और यह संख्या भी संख्या 7 का पूर्ण भाज्य है,।

$114=163 \times 7$ ,

और न केवल यह बल्कि इन संख्याओं का सीधा सीधा योग किया जाए तो भी अंक 7 ही प्राप्त होता है,

$$1 + 1 + 4 + 1 = 7$$

है न सांख्यिकी का चमत्कार,

पार्ट – 20 ( अंतिम पार्ट )

पवित्र कुरान में सूरह अल फुरकान पाठ संख्या 25 की आयत संख्या 6 में अल्लाह के द्वारा अवतरित हुआ है:

6) कहो कि इसको उसने उतारा है जो आकाशों और धरती के भेद को जानता है।  
निस्सन्देह वह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

इस श्रंखला से संबंधित सभी पोस्टों में हमने पवित्र कुरान में संख्या 7 से संबंधित कुछ सांख्यिकी गणित के रहस्य के विषय में अध्ययन किया, और इसके साथ ही अंतिम नबी

मुहम्मद सल्ल. के कुछ कथनों का जो संख्या 7 से संबंधित हैं , के विषय में मैं भी जाना,

निश्चित ही इस पूरे शोध में सबसे उचित उदाहरण कुरान के अक्षरों, वाक्यों ( आयतों) , और पाठ संख्याओं का अंक 7 के माध्यम से अंतर्संबंधित होना है, और हमें पता लगा कि अंतिम परिणाम हमेशा ही अंक 7 बनता है, चाहे हम इस गणना को विभिन्न विधियों से पढ़ें,

निश्चित ही इस पूरे अध्ययन के अंतिम भाग में हम इस, तथ्य के भी साक्षी बने कि कुरान का प्रारंभ का पाठ और अंत का पाठ भी और यदि आप और अध्ययन करें तो प्रारंभ की और अंत की आयतें और प्रारंभ और अंत के शब्दों में भी संख्या 7 से सांख्यिकी रूप से संबंध बनाते हैं,

जो सब मिलकर यही प्रमाणित करता है कि शब्द के माध्यम से इस प्रकार से गणित को परोया जाना केवल और केवल सर्वज्ञानी ईश्वर के द्वारा ही संभव है,

-----

<https://www.facebook.com/kaheel7Hindi/>